6) **समाज सदैव परिवर्तनशील एवं जटिल व्यवस्था है (Society is a Ever-Changing and Complex System)**—समाज की प्रमुख विशेषता है कि समाज की प्रकृति सदैव परिवर्तनशील है। समाज की सामाजिक संरचना में सदैव परिवर्तन होता रहता है। कोई भी समाज आज वैसा नहीं है जैसा वह एक वर्ष पहले या एक हजार वर्ष पहले था। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि समाज परिवर्तनशील है। समाज एक जटिल व्यवस्था होने के कारण अनेक प्रकार के सामाजिक सन्दर्भों से निर्मित है। एक ही व्यक्ति हजारों व्यक्तियों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होता है। व्यक्ति अनेक प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों में बँधे होने के कारण दूसरों के साथ सम्बन्धों एवं अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर करता है। अतः सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ व्यक्ति के व्यवहारों एवं विचारों में भी परिवर्तन होने लगता है।

7) **समाज मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है (Society is not Confined to Human Beings Only)**—**मैकाइवर एवं पेज** ने कहा है, "जहाँ कहीं जीवन है, वहीं समाज है।" इसका अभिप्राय यह है कि सभी जीवधारियों के अपने–अपने समाज होते हैं। चीटियों तथा मधुमक्खियों के भी अपने समाज होते हैं। निम्नतम स्तर वाले जीवधारियों में सामाजिक जागरूकता बहुत ही कम तथा सामाजिक सम्पर्क भी बहुत ही अल्पकालीन होते हैं। जहाँ पारस्परिक जागरूकता का अभाव होता है वहाँ समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सभी वर्ग के प्राणियों की अपेक्षा मानव समाज क अध्ययन अधिक किया जाता है जिसका कारण है अन्य वर्गों की अपेक्षा मानव विकास उच्चतम स्तर पर होता है। मनुष्य अपनी योग्यता क्षमता, गुणों एवं शारीरिक विशेषताअं के कारण संस्कृति का निर्माता है। मनुष्य का अपना समाज, संगठन एवं सामाजिव व्यवस्था है। इसलिए मानव समाज का अध्ययन ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

1.1.3. व्यक्ति और समाज

जिस प्रकार समाज विभिन्न व्यक्तियों से मिलकर बनता है उसी प्रकार व्यक्ति समाज बिना रह नहीं सकता। **अरस्तु** के अनुसार, "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।" व्यवि हमेशा अन्य व्यक्तियों के मध्य ही रह सकता है। अतः कह सकते हैं मनुष्य समाज से व समाज मनुष्य से है।

1.1.4. शिक्षा व समाज में सम्बन्ध (Relation betwee Education and Society)

वर्तमान में ही नहीं अपितु प्राचीनकाल से ही हमें यह देखने को मिलता है कि समाज स्वरूप के आधार पर शिक्षा के स्वरूप को भी रखा जाता है। वर्तमान समय में सम अपने सिद्धान्तों के अनुसार ही शिक्षा की व्यवस्था करता है।

ओटावे के अनुसार, "किसी भी समाज में दी जाने वाली शिक्षा समय–समय पर उ प्रकार बदलती है, जिस प्रकार समाज बदलता है।"

इसे निम्न उदाहरणों द्वारा और अधिक स्पष्ट रूप से समझते हैं–

1) **भौतिकवादी समाज (Materialistic Society)**—शिक्षा की ऐसी व्यवस्था है जि समाज व्यावसायिक सम्पन्नता प्राप्त करता है। इसमें भौतिक सुख–सुविधाओं ज्यादा महत्व दिया जाता है।

2) **आदर्शवादी समाज (Idealistic Society)**—इसमें आध्यात्मिकता को अधिक म दिया जाता है, अतः ऐसे समाज की शिक्षा में चारित्रिक गठन एवं नैतिक विकास बल दिया जाता है।

Scanned by TapScanner

3) **प्रयोजनवादी समाज (Pragmatic Society)**—प्रयोजनवादी के अनुसार इस परिवर्तित समाज में शिक्षा का स्वरूप भी बदलते रहना चाहिए। अतः इस प्रकार समाज व शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती है, अतः दोनों एक दूसरे पर पूर्णतया निर्भर हैं। इसलिए समाज पर शिक्षा के प्रभाव व शिक्षा पर समाज के प्रभाव को समझते हुए हम इसके सम्बन्ध को और अधिक अच्छे से समझ सकेगें।

1.1.5. समाज का शिक्षा पर प्रभाव (Effect of Society on Education)

शिक्षा पर समाज के प्रभाव को हम निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं—

1) **समाज की भौगोलिक स्थिति और शिक्षा (Geographical Situation of Society and Education)**—किसी भी समाज का जीवन उसकी भौगोलिक स्थिति के अनुसार बदलता रहता है जिस समाज की भौगोलिक स्थिति मानव जीवन के अनुकूल होती है और प्राकृतिक संसाधन भी भरपूर होते हैं, उनमें व्यक्तियों के पास शिक्षा हेतु समय व धन दोनों होते हैं। परिणामतः उनमें शिक्षा की उचित व्यवस्था होती है परन्तु जिस समाज की भौगोलिक स्थिति ऐसी हो जिसमें मनुष्य को जीवन रक्षा के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। उनमें शिक्षा हेतु समय व धन की कमी होती है और वहाँ शिक्षा का क्षेत्र भी सीमित होता है।

2) **समाज की संरचना और शिक्षा (Structure of Society and Education)**—भिन्न–भिन्न समाज का स्वरूप भी भिन्न ही होता है। किसी समाज में जातियाँ होती हैं व जाति–भेद भी, कुछ समाज में जातियाँ तो होती हैं परन्तु जाति भेद नहीं होते हैं। भारतीय समाज में जहाँ प्राचीन समय में शूद्र को उच्च शिक्षा से वंचित कर दिया जाता था वहाँ आज इस प्रकार का कोई जाति–भेद देखने को नही मिलता है।

3) **राजनीतिक दशाओं का प्रभाव (Influence of Political Conditions)**—शिक्षा पर समाज की राजनीतिक दशाओं का भी प्रभाव पूर्णतः पड़ता है जिस समाज की राजनीतिक स्थिति जैसी होती है उसके शिक्षा का स्वरूप भी वैसे ही देखने को मिलता है। यही कारण है कि आज अमेरिका, रूस, चीन, जापान तथा भारत इत्यादि में शिक्षा की व्यवस्था राजनीतिक दशाओं के आधार पर ही देखने को मिलती है।

4) **समाज की संस्कृति और शिक्षा (Culture of Society and Education)**—किसी भी समाज की संस्कृति, उस समाज की रहन–सहन, खान–पान, व्यवहार, प्रतिमान, विश्वास, परम्पराएँ, आचार–विचार, रीति–रिवाज, आदर्श, मूल्य, कला, कौशल, संगीत, नृत्य, साहित्य, भाषा, धर्म, दर्शन आदि हैं। किसी भी समाज का उसकी संस्कृति पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है।

5) **आर्थिक दशाओं का प्रभाव (Influence of Economic Conditions)**—समाज की आर्थिक दशा का भी प्रभाव शिक्षा पर पड़ता है जिस समाज की आर्थिक दशा अच्छी होती है वहाँ शिक्षण संस्थाएँ खोली जाती हैं, उच्च भवन की व्यवस्था की जाती है। इसके विपरीत जिस समाज की आर्थिक स्थिति अच्छी नही होती वहाँ व्यावसायिक शिक्षा एवं निःशुल्क शिक्षा के बारे में सोचना कल्पना मात्र है।

6) **शिक्षा व सामाजिक परिवर्तन (Education and Social Change)**—समाज परिवर्तनशील होता है। अतः समाज के साथ उसके शिक्षा के स्वरूप भी बदलते रहते हैं, जैसे – प्राचीनकाल में भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता पर अधिक बल दिया जाता था परन्तु वर्तमान में विज्ञान और तकनीकी की शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। आज नारियाँ, पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं यह सामाजिक परिवर्तन का एक अच्छा उदाहरण है।

Scanned by TapScanner

1.1.6. शिक्षा का समाज पर प्रभाव (Effect of Education on Society)

जेस प्रकार एक तरफ समाज, शिक्षा को प्रभावित करता है वहीं दूसरी ओर इस बात को ी हम नकार नहीं सकते कि शिक्षा भी काफी हद तक समाज की सांस्कृतिक, राजनीतिक ा आर्थिक दशा को प्रभावित करती है। जिसे निम्न बिन्दुओं द्वारा अधिक स्पष्ट रूप से ामझा जा सकता है–

) **शिक्षा व सामाजिक परिवर्तन (Education and Social Change)**–आधुनिक समय में विज्ञान तथा अनुसंधान के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकियों एवं प्रविधियों (Techniques) के क्षेत्र में नवीन परिवर्तन शिक्षा की ही देन है। शिक्षा ही सामाजिक परिवर्तन का मूल कारण है जिसका मुख्य कारण मनुष्य द्वारा सादा जीवन न अपनाकर प्रभुत्व सम्पन्न जीवन को अपनाना है।

) **शिक्षा द्वारा समाज की भौगालिक स्थिति पर नियंत्रण (Control on Geographical Situation of Society by Education)**–शिक्षा के माध्यम से समाज की वे भौगोलिक स्थितियाँ जो मनुष्य के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती थीं उन पर नियंत्रण पा लिया गया है। आज 'जलयान' के निर्माण से समुद्र तक को हम आसानी से पार कर सकते हैं, अतः शिक्षा के माध्यम से ही हम इन भौगोलिक स्थितियों पर नियंत्रण पा सकते हैं।

) **सामाजिक विरासत का संरक्षण (Preservation of Social Heritage)**–प्रत्येक समाज को अपनी संस्कृति व सभ्यता पर गर्व होता है अतः प्रत्येक समाज अपने सामाजिक रीति–रिवाज, परम्पराएँ, मूल्यों, आदर्शों इत्यादि को संरक्षित रखना चाहता है, अतः शिक्षा इस कार्य में समाज को अपना पूर्ण सहयोग देती है।

) **शिक्षा द्वारा समाज का राजनीतिक विकास (Political Development of Society by Education)**–शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति समाज की राजनीतिक जागरूकता से परिचित होता है, उसे अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों का ज्ञान होता है। इस प्रकार एक शिक्षित व्यक्ति ही अपने देश की राजनीतिक विचारधारा की रक्षा एवं उसका विकास कर सकता है।

) **सामाजिक भावना की जागृति (Awakening of Social Feeling)**–किसी भी व्यक्ति की उन्नति हेतु उसमें सामाजिक भावना का विकास अवश्य करना चाहिए, यह कार्य केवल शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। अतः शिक्षा बालक के सामाजीकरण का एक सशक्त साधन है।

शिक्षा व समाज की आर्थिक स्थिति (Economic Condition of Society and Education)–आज शिक्षा, समाज की आर्थिक स्थिति का मूलाधार है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को किसी उत्पादन कार्य में निपुण करने का पूरा प्रयत्न किया जाता है।

ा प्रकार उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा व समाज दोनों ही एक दूसरे पूरक होते हैं। जिस प्रकार का समाज होता है, वहाँ शिक्षा की व्यवस्था वैसे ही नेश्चित की जाती है। अतः समाज व शिक्षा के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। दोनों ही क–दूसरे पर पूरी तरह आश्रित हैं। अतः एक के बिना दूसरे की कल्पना करना मात्र एक ल्पना ही होगी और कुछ भी नहीं।

Scanned by TapScanner